

लैंगिक असमानता के प्रति ग्रामीण महिलाओं के अभिवृत्ति परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका पर डिजिटल रूप से प्रसार

रीता कुमारी, अनुसंधान छात्र, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ़ (झारखंड)

सारांश

लैंगिक असमानता भारतीय ग्रामीण समाज की एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या है, जो शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, निर्णय-निर्माण, संपत्ति के अधिकार तथा सामाजिक सहभागिता जैसे क्षेत्रों में महिलाओं के अवसरों को प्रभावित करती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य लैंगिक असमानता के प्रति ग्रामीण महिलाओं की अभिवृत्तियों में परिवर्तन लाने में शिक्षा की भूमिका तथा उसके डिजिटल प्रसार का वैचारिक विश्लेषण करना है। शिक्षा महिलाओं में अधिकारों, समानता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता विकसित करने का प्रभावी माध्यम हो सकती है। औपचारिक शिक्षा के साथ डिजिटल शिक्षा, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, मोबाइल एप्लीकेशन, सोशल मीडिया, डिजिटल पुस्तकालय और सूचना-संचार तकनीक ग्रामीण महिलाओं तक नए ज्ञान और विचारों को पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। डिजिटल माध्यमों के द्वारा महिलाएं सरकारी योजनाओं, कानूनी अधिकारों, स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार के अवसरों और सामाजिक मुद्दों से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकती हैं। इससे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं और असमान सामाजिक मान्यताओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होने की संभावनाएं बढ़ती हैं। हालांकि, डिजिटल विभाजन, इंटरनेट की सीमित उपलब्धता, डिजिटल साक्षरता का अभाव, आर्थिक कठिनाइयां और सामाजिक प्रतिबंध इस प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न कर सकते हैं। अतः शिक्षा और डिजिटल साक्षरता को एकीकृत करते हुए स्थानीय भाषा में सुलभ एवं सुरक्षित डिजिटल सामग्री उपलब्ध कराना आवश्यक है। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि शिक्षा और डिजिटल संसाधनों का समन्वय ग्रामीण महिलाओं की जागरूकता, आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता और लैंगिक समानता के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति को बढ़ावा देने में सहायक हो सकता है।

मुख्य शब्द: लैंगिक असमानता, ग्रामीण महिलाएं, शिक्षा, अभिवृत्ति परिवर्तन, डिजिटल शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक जागरूकता, सूचना-संचार तकनीक, लैंगिक समानता।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY